Artistic Narration: *A Peer Reviewed Journal of Visual & Performing Art* **ISSN (P): 0976-7444**
Vol. IV. , 2013

भारतीय प्राचीनतम सिक्कों में चित्ररित कला

डॉ0 अलका चढ्ढा
समन्वयक
ललित कला विभाग
चौ0 चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ
कु0 विभा लोधी
शोध छात्रा
चित्रकला विभाग,
आर0 जी0(पी0जी0) कालिज, मेरठ

प्राचीन शरत में ललित कलाओ का बड़ा विकास हुआ था। मानव तथा पषु–पक्षियों के बाह्रा स्वरुप का जैसा चित्रण प्राचीन चित्रकला तथा मूर्तिकला में मिलता है, वैसा ही प्रदर्षन सिक्कों पर भी मिलता है। प्राचीन भारतीय इतिहास के विभिन्न अंगो की सही जानकारी में सिक्कें अत्यन्त सहायक हैं। राजनीतिक इतिहास के अतिरिक्त सांस्कृतिक इतिहास का ज्ञान भी सिक्कों के आधार पर प्रभूत मात्रा में हुआ हैं। द्वितीय षताब्दी ई0 पू0 में द्वितीय षताब्दी ई0 तक देवी देवताओ का क्या स्वरुप था, इसकी जानकारी सिक्को में प्राप्त उनकी आकृतियो से होती हैं। पंचाल के सिक्को पर अनेको देवी देवताओ के मूर्त रुप मिलते है। उनमे भद्रादेवी और फाल्गुनीदेवी का स्वरुप केवल सिक्कों से ही ज्ञात हुआ हैं। गणो और जनपदों के सिक्कों पर षिव, कार्तिकेय और लक्ष्मी के विविध मूर्तन मिलते हैं। तक्षषिला, औदुम्बर तथा त्रिर्गत जनपद की मुद्राओं पर प्रचीन मन्दिरों के अनेक रुप अंकित हुए है। सातवाहनों के सिक्कों पर अनेक वृत वाले पर्वत इत्यिादि बनाये गये हैं।

भारत के सिक्कों के उद्भव की कहानी मानव सभ्यता के विकास के साथ जुडी हुई हैं। मनुष्य के क्रमिक बौद्धिक विकास से ही सिक्कों का जन्म हुआ हैं। जिससे भूतकाल के बारे में नया ज्ञान मिलता हैं तथा

Imperial, 1st Series

ऐतिहासिक तथ्यो का निर्माण होता हैं। इसी का अध्धयन करने की सुविधा से मुद्राषास्त्र का निर्माण हुआ। अंग्रेजी के न्यूमिस्मेअिक्स षब्द की उत्पति ग्रीक नोमोस व लेटिन न्यूमिस्म से हुई हैं। प्राचीन भारतीय साहित्य में उसे "मुद्रा" कहा गया हैं। अंग्रेजी में उसे "कॉएन" (coin) कहते हैं। जो फ्रेंच भाषा के एक षब्द "कॉएन"(coygne) से बना हैं।(1) भारत की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और कला सम्बन्धी जानकारी के लिये प्राचीन सिक्कें बहुत उपयोगी सिद्ध हुए हैं।

Imperial, 4th Series

इतिहास–निरूपण की दृष्टि से उपलब्ध साधनो और साक्ष्यों के रूप में जो भी प्राचीन कालीन अवषेष आज उपलब्ध हैं उनमे सिक्कों का विषिष्ट मूल्य और महत्व हैं। जब यूरोप में जागरण (रिनेसॉ) काल का आरम्भ हुआ उस समय लोगों में पुरावस्तुओं के संग्रह में रूचि जाग्रत हुई और उन्होनें सिक्कों में कला के लघु रूप के दर्षन किये और उनके संग्रह की ओर प्रवृत हुए। उसके बाद वहॉ के विद्वानों ने इतिहास–निरूपण के साक्ष्य और साधन के रूप में सिक्कों की उपयोगिता का अनुभव किया। फिर तो अठारहवीं षती के आते–आते प्राचीन सिक्कें गम्भीर अध्ययन के विषय बन गये। सिक्कों का अध्ययन और षोध इतिहास का उपांग माने जाने लगा और मुद्रातत्व (न्यूमिस्मेअिक्स) के नाम से जाना जाने वाला वैज्ञानिक रूप धारण कर लिया।

हमारे देष में प्राचीन सिक्कों की ओर सबसे पहले उन अग्रेंज सैनिकों, इंजीनियरों और राजकीय अधिकारियों का ध्यान गया जो अठारहवीं षती के अन्त औरं उन्नीसवीं षती ई0 के आरम्भ में गॉवों–देहातों और जंगलो में विभिन्न प्रकार के काम करने के लिये नियुत्त किये गये थे। उन्हें अपने कार्य के बीच खुदाई करते हुए भूमि में दबे सिक्कें प्राप्त हुए। उनके प्रति उनकी जिज्ञासा जगी; उन्होनें उनके संग्रह में रूचि ली और वे प्राचीन शरतीय सिक्कों के सर्वप्रथम अन्वेषी बने।

इन सिक्कों में निहित तीन तत्व हैं–1. सन्तुलित धातु, 2. निष्चित वनज और 3. प्रतीक का अंकन।(2) किन्तु धातु और वजन का उपयोग इतिहास–निरुपण की दृष्टि से सम्प्रति अत्यन्त सीमित हैं। वे कुछ ही अंषो में अपने देष काल की आर्थिक अवस्था का संकेत देते हैं; बहुलांष में उनका महत्व धात्विक विज्ञान की जानकारी की प्रस्तुति के लिये ही है। किन्तु इस दिषा में सिक्को का उपयोग कम ही हो पाया

है। मुद्रात्विक अध्धयन में सर्वाधिक महत्व सिक्को पर अंकित प्रतीको का ही है। प्रत्येक भॉत के सिक्कों पर अंकित प्रतीकों का अपने स्वतन्त्र रूप हैं जिन्हे पहचान कर उनके प्रचलक राज्यए राजा और काल के प्रति अवधारणा बनाई जा सकती हैं। वे अपने काल के जीवन और संस्कृति तथा कार्यकलापो की जानकारी प्रस्तुत कराने की क्षमता रखते हैं। यहा प्रमुख रूप से हम सिक्कों पर चितरित्र प्रतीकों पर चर्चा करेंगे।

सिक्कों पर अंकित प्रतीक तीन रूपो में प्राप्त होते हैं– 1.आलेख 2.छवि अथवा आकृति,3. लांछन। इन तीनो की ही एतिहासिक जानकारी प्रस्तुत करने की अलग–अलग सीमा और क्षमता हैं। इनमें इतिहास–निरूपण में आलेखो का ही सर्वाधिक योग रहा हैं और हैं। ये आलेख सामान्यतया सिक्कों के किनारे अंकित देखे जाते हैं। कभी कदा वे सिक्कें के समूचे पटल पर अंकित मिलते हैं। अक्सर वे प्राचीन सिक्कों के एक ओर ही अंकित मिलते हैं। किन्तु भारत के यवन–बाख्त्री, षक–पह्लव सिक्कों पर उनका अंकन समान रूप से दोनों ओर हुआ हैं। कुछ अंषो में यही बात कुषाण औरं गुप्तकालीन सिक्कों में भी परिलक्षित होती हैं। मुस्लिम षासकों के सिक्कों पर धार्मिक दृष्टि से आकृति अंकन का निषेध होने का कारण अधिकांषतः उसके दोनो पटल अरबी–फारसी लिपि से भरे रहते हैं।(3)

ऐतिहासिक जानकारी आलेखों में अंकित तथ्यों से तो होती हैं, उनके लिपि, लिपि–स्वरूप और अक्षसर निरूपण से भी अनेक बातो का ज्ञान प्राप्त होता हैं। अधिकांष सिक्कें एकभाषी होते हैं किन्तु प्राचीनकालीन कुछ सिक्कें व्दिभाषिक औंर त्रिभाषिक भी हैं। यवन–बाख्त्री, षक–पह्लव सिक्कें प्रायः सभी व्दिभाषिक हैं। उन पर आलेख एक ओर यवन और दूसरी ओर खरोष्ठी लिपि में हैं। कुछ भारतीय–बाख्त्री सिक्कों पर खरोष्ठी के स्थान पर ब्राह्मी लिपि का प्रयोग हुआ हैं। पष्चिमी क्षत्रप नहपान के सिक्कें त्रिभाषिक हैं। उनपर यवन, खरोष्ठी और ब्राह्मी तीन लिपियों में लेख हैं। इसके अतिरिक्त उत्तर भारत के सभी सिक्कों पर ब्राह्मी लिपि में ही आलेखन हुआ हैं। गुप्तोत्तर काल में वह नागरी लिपी की ओर उन्मुख्स हो गयी थी। इस प्रकार लिपि ही किसी न किसी रूप में ऐतिहासिक काल–क्रम का परिचय दे देते हैं। कतिपय सिक्कों के उद्गम और प्रचार क्षेत्र का भी अनुमान लिपियों के सहारे किया जा सकता हैं।

कुछ सिक्कों पर वे केवल एक या दो अक्षरों के रूप में उपलब्ध होते हैं जो षासक के नाम अथवा विरूद के लाघविक रूप अनुमान किये जाते हैं। अधिकांष सिक्कों के लेख काफी विस्तृत देखने में आते हैं। उनमें षासकों के नाम और विस्तृत विरूद का उल्लेख रहता हैं। विरूदो में सिक्कों के प्रचलनकर्ता की किन्ही सफलता का संकेत मिल सकता हैं अथवा उनसे किसी अन्य महत्वपूर्ण ऐतिहासिक तथ्यों की जानकारी प्राप्त हो सकती हैं। पष्चिमी क्षत्रपों के सिक्कों पर षासक के पिता अथवा उसके पूर्ववर्ती षासक का नामोल्लेख हुआ हैं।(4) कुछ सिक्कों पर तिथी का भी अंकन हुआ हैं। इस प्रकार सिक्कों पर अंकित अभिलेखों से स्पष्ट रूप से राज्य, षासक औंर घटनाओं की जानकारी उपलब्ध होती हैं।

इतिहास निरूपण के निमित्त सिक्कों में उपलब्ध होने वाला दूसरा साधन उन पर अंकित मुख्य प्रतीक छवि और आकृति हैं। जिनका अंकन भारतीय–बाख्त्री काल से आरम्भ होकर गुप्तोतर काल और कभी–कभी पीछे तक भी होता रहा हैं। उनपर प्रचलन कर्ता षासकों के छवि का अंकन और उनके इष्ट देवी–देवताओं का आकृति के रूप में देखा जाता हैं। भारतीय–बाख्त्री सिक्कों पर अंकित मुण्ड और उर्ध्वाग निसंदिग्ध रुप से प्रचलक की यथा–रुप छवि समझी जाती हैं। यही बात सातवाहन षासको के चॉदी के सिक्कों पर अंकित छवि के सम्बन्ध में भी कही जा सकती हैं। अन्य भॉत के भारतीय सिक्कों के सम्बन्ध में निष्चयात्मक रूप में कह सकना कठिन हैं। जिन सिक्कों पर छवि का अंकन मिलता हैं वे अत्यन्त महत्व के साक्ष्य समझे जाते हैं। उनसे प्रचलक षासक के व्यक्तित्व एंव चरित्र का अनुमान किया जा सकता हैं और कभी कदा तो वह कथित चरित्र से भी अधिक प्रमाणित हो सकते हैं। कभी–कभी इन सिक्कों से षासक के षासनकाल की अवधि का भी अनुमान होता हैं। सिक्कों पर अंकित छवियों के आधार पर टार्न ने यवन और बाख्त्री षासको के इतिहास का विस्तृत स्वरूप प्रस्तुत किया था। हुविष्क के छवि के अंकन के आधार पर उसके विस्तृत राज्य–काल की कल्पना करने की चेष्ठा हुई हैं। छवि का अंकन न होने पर उसके मात्र आकृति स्वरूप से राजनीतिक इतिहास के सम्बंध में तो कुछ नहीं कहा जा सकता किन्तु सांस्कृतिक इतिहास को अवष्य देखा

जा सकता हैं। देवी–देवताओं की आकृति का चित्रण भारतीय सिक्कों का अभिन्न अंग हैं। इनसे धर्मिक इतिहास और प्रतिमा–विधान की जानकारी उपलब्ध हो सकती हैं और होती हैं।

हिन्द–यूनानी, षक–पह्लव, कुषाण आदि विदेषी राजाओं की आकृतियॉ उनके सिक्कों पर बनी हुई हैं। उन राजाओ के स्वरुप का अभिज्ञान उनके सिक्कों से होता हैं। उन पर विदेषी तथा भारतीय दोनो प्रकार के देवी देवताओ का अंकन हुआ हैं। षिव, कार्तिकेय, गणेष, कृष्ण, बलराम, इन्द्र, लक्ष्मी आदि की सुन्दर आकृतियॉ बनाई गई हैं। बुद्ध को स्थानक तथा आसन, दोनो रुपो में दिखलाया गया हैं। वह उतरीय तथा अधोवस्त्र पहने हुए हैं। उन्हें अभय मुद्रा, वितर्क मुद्रा अथवा धर्मचक्रप्रवर्तन मुद्रा में प्रदर्षित किया गया हैं।

गुप्त सम्राटो को उनके सिक्कों पर वीणा बजाते हुए, षिकार करते हुए, धनुर्धारी योद्धा के रुप में, गज अथवा अष्व पर सवारी करते हुए आदि विभिन्न रुपो में दिखाया गया हैं। देव–आकृति के साथ प्रभामण्डल मिलता हैं। देवी–देवता को अपने वाहन के साथ भी प्रदर्षित किया गया हैं।(5) ये सिक्कें कलात्मक दृष्टि से अत्यन्त उत्कृष्ट हैं। हर्षवर्धन के एक सोने के सिक्के पर षिव और पार्वती नन्दी पर आसीन प्रर्दष्ति हुए हैं। षिव जटाजूट हैं और उनके कानो में कुण्डल हैं। पार्वती को मस्तक पर ललाटिका, कानो में कुण्डल तथा गले में एकावली धारण किए हुए दिखाया गया हैं। चतुर्भुजी षिव के उपरी दो हाथो में माला तथा त्रिषूल हैं। निचला एक हाथ उनकी जंघा पर रखा हैं तथा दूसरा पार्वती के गले में हैं। पार्वती षिव की तरफ देख रही हैं। यह आकृति तत्कालीन मूर्तिकला से अत्यन्त साम्य रखती हैं। पूर्व मध्यकालीन सिक्कों पर चतुर्भुजी लक्ष्मी का अंकन अधिक लोकप्रिय हुआ। वह पद्मासन मुद्रा में आसीन हैं। उनके उपरी दो हाथ में कमल हैं तथा नीचे दोंनो हाथ जंघा पर रखे हुए हैं। षिव, वराह तथा हनुमान की आकृतियॉ भी तत्कालीन सिक्कों पर मिलती हैं।

भारत के प्राचीनतम सिक्कों को पंच पध्दति से चिन्हित होने के कारण **'पंचमार्क'** नाम से प्रसंगित किया जाता हैं। यह पंच चिन्हित सिक्कें महाजनपद् की छठी षताब्दी ईसा पूर्व के हैं। इन सिक्कों पर प्रतीक विविध या पॉच और सात होते हैं। इन सिक्कों पर पाये रूपांकन ज्यादातर सूरज, विभिन्न पषु, पेड़ और कुछ ज्यामितीय प्रतीको की तरह प्रकृति से तैयार हैं। प्राचीन कुषाण कालीन सिक्कों में स्वर्ण सिक्कों की अधिकता

हैं जिनपर हिन्दु एंव बौध्द देवी–देवताओ के अतिरिक्त यूनानी एंव पारसीक देवताओ का अंकन अत्यन्त रोचक बन पड़ा हैं।(6) वही सातवाहन षासक अपनी मुद्राओ पर स्थानीय प्रतीक चिन्ह के रूप में वृषभ, गज, सिंह, घेरे में वृक्ष, महराबदार पर्वत, अष्व, चक्र, लक्ष्मी, मत्स्य युक्त नदी, स्वस्तिक,नन्दिपद, कमल, त्रिरत्न इत्यिादि को चितरित करते थे। यह अपनी मुद्राओं में ब्राह्मी लिपि एंव प्राकृत भाषा का प्रयोग करते थे। इनके चित्र प्रकार के सिक्कों पर द्रविण भाषा का प्रयोग हुआ हैं जबकि लिपि ब्राह्मी ही हैं। इसी प्रकार जिस तरह गुप्तकाल भारतीय इतिहास का स्वर्णयुग माना जाता है उसी प्रकार यह विकास मुद्रा निर्माण के क्षेत्र में भी दिखाई पड़ता हैं। इस काल में सिक्कों पर देवी को सिंहासन, कमल, मोढ़ा, सिंह पर बैठे हुए, नदी देवी गंगा एंव कार्तिकेय देवता भी प्रदषित हुए है इसके अतिरिक्त गुप्त सम्राटो की रानिया, अष्वरोही, गजरोही, चक्रध्वज,राजदण्ड, धनुर्धर आदि चित्ररित हैं।(7)

इतिहास निरूपण के निमित्त सिक्कों में उपलब्ध होने वाला अन्य साधन है लांछन! अनेक सिक्कों पर छवि अथवा आकृति के स्थान पर उसके लांछन मात्र प्राप्त होते हैं। कभी कदा ये लांछन छवि तथा आकृति के साथ भी देखा जाता हैं। इस देष के अपहात मुद्रा कहे जाने वाले प्राचीनतम सिक्कों पर केवल एक या अधिक लांछनानं के समूह का अंकन किया गया था। कुछ अन्य ढालित एंव टंकित अभिलेख–विहीन सिक्कों पर लांछनो का समूह देखने में आता हैं। कभी कदा आरम्भिक अभिलिखित सिक्कों पर भी लांछन समूह देखने में आता हैं।(8) कभी कदा आरम्भिक अभिलिखित सिक्कों पर भी लांछन समूह देखा जा सकता हैं। सिक्कों पर अंकित इस प्रकार के लांछनों के पीछे धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक आदि कुछ भी कारण हो सकते हैं। उनसे एतिहासिक तथ्यों का कुछ अनुमान किया जा सकता हैं।

प्राचीन इतिहास के निरूपण में हमारे लिये आज उन सिक्कों का मुल्य और महत्व है जिन्हे हमारे पूर्वज जाने अनजाने अपने पीछे भूमि में दबा छोड़ गये थें। इतिहास–निरूपण की दृष्टि से उपलब्ध साधनो और साक्ष्यों के रूप में जो भी प्राचीन कालीन अवषेष आज उपलब्ध हैं उनमे सिक्कों का विषिष्ट मूल्य और महत्व हैं। इस प्रसंग में कहना ना होगा कि सिक्कों का उद्भव दैनिक आवष्यकताओं की आपूर्ति के निमित्त, लेन–देन, क्रय–विक्रय में सरल और सुविधाजनक उपकरण के रूप में हुआ था। उनका अविष्कार जब भी हुआ हो और जिन लोगो ने भी किया हो, वे उनके रूप में अनचाहे, अनजाने ऐसा उपकरण प्रस्तुत कर गये, जिसने अपने उद्ेष्य की पूर्ति तो की ही, साथ ही उनमें वे अपने जीवन, सेस्कृति और अपने कार्य कलसप की अमिट छाप भी छोड़ गये। आज वे अपने काल के साक्ष्य बनकर हमारे लिये इतिहास–निरूपण के ताने–बाने का काम कर रहे हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूचि

1. *सिंह, डा0 आनन्द षंकर : भारत की प्राचीन मुद्राएँ, षारदा पुस्तक भवन, इलाहबाद, 1998, पृ0–23*
2. *वाजपेयी, डा0 संतोष कुमार : ऐतिहासिक भारतीय सिक्के, ईस्टन बुक लिंकर्स, दिल्ली, 1997, पृ0– 56*
3. *http://sumitsoren1983.blogspot.in/2011/11/coins-of-india-ancient.html*
4. *http://www.indiaonline.in/about/Profile/History/CoinsandCurrencies/Coinage-in-Ancient-Era.html*
5. *गुप्त, डॉ0 परमेष्वरीलाल, भारत के पूर्व–कालिक सिक्के, विष्वविद्यालय प्रकाषन, वाराणसी, 1996, पृ0– 12*
6. *सिंह, डॉ0 आनन्द षंकर : भारत की प्राचीन मुद्राएँ, षारदा पुस्तक भवन, इलाहबाद, 1998, पृ0–32*
7. *जायसवाल, के0 पी0: इम्पीरियल हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, लाहौर, 1934, पृ0– 5*
8. *षर्मा, जी0 बी0: कॉएन्सष सील्स एण्ड सीलिंग्स फ्रॉम संघोल, चण्डीगढ़, 1986, पृ0–21*

सन्र्दभ चित्रसूचि

1. *पंच चिन्हित सिक्कें*
2. *मौर्य कालीन सिक्कें*
3. *कुषाण कालीन सिक्कें*
4. *सातवाहन कालीन सिक्कें*
5. *पष्चिमी क्षत्रप सिक्कें*
6. *गुप्तकालीन सिक्कें*
7. *दक्षिण भारतीय सिक्कें*